मैथिली (एम॰ बी॰)
बी॰ए॰ पार्ट-II

बसंत कुमार
अतिथि शिक्षक
दिनांक- 13.04.20
13.04

प्रकरण- कृति राजकमलक

1. राजकमलक 'अपराजिता' कथा :-

अपराजिता कथामे मिथिलाक उधाम नदीक प्रचंडरूपक वर्णन थिक। कथाकार अपन मित्रमंडलीक संग ट्रेनसँ यात्रा क' रहल छथि। एहि क्रममे ट्रेन समस्तीपुरक 'मुक्तापुर' के समीप पहुँचल छल। दिवानाथ चिचिआरत बाजल देखू मणि देखू अपराजिताक ताण्डव। सत्ये कमला, वागमती, गण्डक, कोशी अपराजिता अछि। ककरो सामर्थ्य नहि जे एकरा पराजित क' सकय। चीनक ह्वांगहो कतेक भयानक छल से चीनक लेल वरदान बनि गेल अछि। येह रूसकेँ देखू ओ अपन टेक्नोलोजिक बलपर नदीकेँ बान्हि देलक। मुदा अपन देशक हाल बेहाल अछि। सरकार आओत चलि जायत, मुदा ई नदीक प्रलयंकारी गतिमे गामक-गाम भसियबैत

खेतकेँ उज्जर करैत, माल - जाल,
लोक - वेदकेँ नाश करैत बहैत रहल।

वेदमे नदीकेँ मनुक्खक सेविका कहल गेल अछि। मुदा ई मिथिलाक नादिकेँ देखू तेहन उद्दाम भ' गेल छथि जेना साक्षात् अपराजिता हो'। रेलगाड़ी चुट्टी जकाँ ससरैत मुक्तापुर स्टेशन पर पहुँचाए। स्टेशनक चारु कात पानिये - पानि। स्टेशन पर असंख्य गरीब - धनिक किसान - मजदूर लहालोट भेल पड़ाए छल। भूखल - पियासल। कतेको लोककेँ मलेरिया ज्वर भेल छैक। रहन कोनो परिवार नहि अछि, जिनकर बच्चा, माए - जाए, दहा - भसिया गेल नहि होइक। किछु समयक बाद साँझ भ' गेल आ' गाड़ी हायाघाट स्टेशन पर पहुँचल, स्टेशन पर चुट्टी ससरक दउर नहि। सैकड़ो लोक नुआ - फटासँ तम्बू बनओने छथि। सर्वत्र हाहाकार आ गंडकी, कोसी मैयाक नामे कोरस सुनाओल जा' रहल छल।

शेष अगिला अंकमे